अध्याय द्वितीय

संबधित साहित्य का अध्ययन

शोध साहित्य का अध्ययन

रेडियो दूरदर्शन हमारे साथ काफी लबे समय से है रेडियो 1927 से तथ दूरदर्शन 1959 से भारत मे अपने प्रसारण कर रहा है ।

इनका उपयोग अनौपचारिक शिक्षा हेतु हो रहा है साथ ही कुछ सीमा तक औपचारिक शिक्षा मे भी इसका उपयोग किया जा रहा है ।

यद्यपि अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमो का विभिन्न वर्गों के व्यक्तियो पर व्यापक प्रभाव पड रहा है फिर भी इन कार्यक्रमो से हुये अधिगम पर शोधकार्य करना इतना सरल नही है ।

सम्प्रेषण का कक्षा शिक्षण मे महत्वपूर्ण स्थान है । फिर भी इस विषय में अभी तक न तो शिक्षा शास्त्रियो ने न ही जन सचार (मीडिया) से जुडे लोगो ने अधिक अनुसधान किया है । इस सबध मे प्रथम अध्ययन **नीरथ पाल** ने किया था।
1959–64

उन्होने नये तरीके से प्रारभ किये गये हायर सेकेन्डरी विद्यालयो के लिये 1959–64 के बीच दूरदर्शन से प्रसरित शैक्षिक कार्यक्रमो का अध्ययन किया था।

1974 मे शासन द्वारा आधुनिक तकनीको का शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार हेतु उपयोग करने का निर्णय लिया गया । इसके फलस्वरूप 1975–76 मे देश के 6 राज्यो मे उपग्रह शिक्षा कार्यक्रम की एक परियोजना चलायी गयी ।

[illegible]

स्थापना एन सी ई आर टी के अतर्गत की गयी । साथ ही प्रत्येक राज्य मे एक शिक्षण तकनीकी सेल राज्य शिक्षा सस्थानो मे स्थापित किया गया ।

इन सस्थाओ के सहयोग एव प्रोत्साहन से शिक्षण प्रोद्योगिकी के क्षेत्र मे अनेक अनुसधान कार्य हुये है ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

60 से अधिक आकाशवाणी केन्द्रो द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमो का प्रसारण किया जा रहा है साथ ही ये सस्थाये शेक्षिक रेडियो प्रसारण के क्षेत्र मे अनुसधान कार्य भी कर रही है ।

शिक्षा अनुसधान के चतुर्थ सर्वेक्षण के अनुसार अब तक देश मे इस सबध मे 21 शोध अध्ययन हो चुके है

अधिकाश अध्ययन 1975–76 के ए टी एस 6 परियोजना के सबध मे हुये है यह भी स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर माध्यमिक स्तर की अपेक्षा अधिक अध्ययन हुये है ।

यह भी स्पष्ट है कि अधिकतम अध्ययन सस्थाओ द्वारा किये गये है न कि शोध छात्रो द्वारा **1986** मे आकाशवाणी के कुल 44 केन्द्रो पर शेक्षिक कार्यक्रम तैयार किये जाते थे जिनका प्रसारण 74 केन्द्रो से हो रहा था था । शिक्षको के लिये भी कार्यक्रम लगभग सभी केन्द्रो से [illegible]

प्रत्येक आकशवाणी केन्द्र (जहाँ पर कार्यक्रम तैयार किये जाते है) मे एक कार्यक्रम सलाहकार समिति गठित की गयी है जिसमे शिक्षा शास्त्री तथा शिक्षको को शामिल किया गया है ।

शैक्षिक रेडियो प्रसारण पर अब तक किये गये अध्ययनो से पता चलता है कि आकाशवाणी केन्द्र शैक्षिक प्रसारण हेतु अपेक्षित समय नही दे पा रहे है जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है साथ ही इन प्रसारणो का समय भी विद्यालयीन समय सारणी के अनुकूल नही है ।

मोहन्ती (1976) ने माध्यमिक स्तर पर विद्यालयीन शैक्षिक कार्यक्रमो के प्रसारण का अध्ययन किया उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक कार्यक्रमो के लिये निर्धारित समय कक्षा वार तथा विषय वार उचित विभाजन नही किया जाता परतु यह अवश्य है कि पाठ पाठ्यक्रमानुसार तैयार किये जाते है ।

मोहन्ती (1984) द्वारा किये गये अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शैक्षिणिक कार्यक्रमो का अधिकतर छात्रो पर कोई प्रभाव नही पडता ।

सूद (1982) ने हरियाणा मे रेडियो प्रसारण के सगठन एव प्रभाव का अध्ययन किया उनके द्वारा प्रेषित किये गये प्रश्नावलियो मे से केवल 20% प्रश्नावली ही वापस मिली ।

उनके अध्ययन से पता चला कि आकाशवाणी द्वारा प्रसारण समय तथा विषय चयन पूर्व योजना तथा विद्यालयो को कार्यक्रमो की पूर्व सूचना देना आदि समयानुसार चर्चा सम्यक रूप से किये जा रहे है

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कुल 93% स्कूलो के पास रेडियो सेट है 78% शिक्षको को इस बात की जानकारी है कि रेडियो पर शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है किंतु फिर भी केवल 37% ही कार्यक्रम सुनते है । केवल 10% शिक्षक ही प्रसारण पश्चात की गतिविधियो का आयोजन करते है । 64% को पता है कि शिक्षको के लिये कार्यक्रम प्रति सप्ताह प्रसारित होता है किंतु केवल 25% शिक्षक ही इसे सुनते है ।

उड़ीसा एस.सी.ई.आर.टी द्वारा भुवनेश्वर तथा कटक जिलो मे किये गये सर्वेक्षण के अनुसार 72% हाईस्कूल 13% मिडिल स्कूलो मे रेडियो सेट थे किंतु किसी भी प्राथमिक विद्यालय मे यह सुविधा नही थी ।

62% हाईस्कूलो में रेडियो सेट चालू हालत मे पाये गये किंतु केवल 15% स्कूलो ने अपनी समय सारणी मे शेक्षिक प्रसारण सुनने का कालखड निर्धारित किया था जबकि केवल 10% स्कूलो मे प्रसारण पूर्व तथा प्रसारण पश्चात के कार्यकलाप आयोजित किये जाते थे ।

छात्रो को शैक्षिक प्रसारण सुनवाने मे मुख्य बाधा समय तथा धन की कमी पायी गयी । इसी प्रकार एक अध्ययन **नागराज (1983)** ने बगलौर मे किया । उनके अनुसार 57 मे से केवल 27 स्कूलो मे रेडियो सेट चालू हालत मे थे । केवल 17 विधालय के पास कार्यक्रम सुनवाने की व्यवस्था थी। और 20% से भी कम विद्यालय मे समय सारणी मे शैक्षिक प्रसारण हेतु कालखड निर्धारित किये गये

मोहन्ती (1976) ने अपने अध्ययन मे स्पष्ट किया कि रेडियो शैक्षिक प्रसारणो से छात्रो के केवल सज्ञानात्मक पक्ष मे भी वृद्धि होती है उनके अनुसार शिक्षक रेडियो शैक्षिक प्रसारणो से सतुष्ट थे उन्होने यह भी बताया कि शैक्षिक रेडियो प्रसारणो से अधिगम मे सुधार हेतु प्रसारण समय मे वृद्धि करना आवश्यक है।

इसी प्रकार का एक अध्ययन मोहन्ती तथा अन्य ने किया उन्होने पाया कि सामान्यता शिक्षक प्रसारणो की भाषा से सतुष्ट है कितु रेडियो की आवाज व प्रसारण गति से असतुष्ट है । अधिकाश अध्यापक प्रसारण पूर्व तथा प्रसारण पश्चात की गतिविधियो की आवश्यकता तथा भूमिका अपरिचित है ।

गिल (1984) द्वारा **" टीच इंग्लिश लर्न इंग्लिश "** पाठो का शिक्षको एव छात्रो पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया । उन्होने पाया कि जो शिक्षक व छात्र यह कार्यक्रम सुनते थे उनकी अग्रेजी भाषा मे सुधार हुआ तथा परीक्षणो से उन्हे उन शिक्षको व छात्रो से अधिक अक प्राप्त हुये जो कार्यक्रम नही सुनते थे ।

उन्होने अपने अध्ययन मे पाया कि इस प्रकार के कार्यक्रम शिक्षको व छात्रो दोनो को उनकी पहिचान बनाने मे मदद करते है तथा प्रभावशाली तो है ही अगर इन कार्यक्रमो को रूचि लेकर रेडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया जाय तथा अन्य शैक्षणिक विषयो को भी इसमे शामिल कर लिया जाय तो [illegible] से रेडियो

शैक्षिक प्रसारण का सशक्त एव उपयोगी माध्यम बन सकता है । विशेषकर छोटी (प्राथमिक स्तर) कक्षाओ के छात्रो व अध्यापको के लिये ए वी जागीरदार (चीफ प्रोड्यूसर एजूकेशनल ब्राउकास्टिग शिक्षाप्रसार ए आई आर ससद मार्ग नई दिल्ली) के विचार मे स्कूलो मे शिक्षा का प्रसार रेडियो स्टेशनो द्वारा किया जा रहा है तांकि सभी प्रादेशिक भाषा भाषी शिक्षको व छात्रो को इनका लाभ प्राप्त हो सके । इस समय स्कूलो के लिये यह प्रसारण 20 मिनिट के लिये किया जाता है । बहुत से स्थानो मे कुछ कार्यक्रमो का प्रसारण दोपहर के समय किया जाता है । इन कार्यक्रमो से अध्यापको की सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है तथा ये कार्यक्रम उन्हे जागृत भी करते है इनसे यह परीक्षण परिणाम भी देखने को मिले कि इन कार्यक्रमो को सुनने के पश्चात शिक्षको के पढाने के तरीको मे प्रभावपूर्ण ढग से सुधार हुआ है ।

जागीरदार का कथन है कि इन कार्यक्रमो का मुख्य उद्देश्य है अध्यापको के ज्ञान मे अभिवृद्धि करना ।

शिक्षा प्रसारण कार्यक्रमो की योजना राज्य शिक्षा विभाग के अनुभवी व्यक्तियो एव शिक्षा अधिकारियो से सपर्क करके की जाती है ये लोग विषय स्तर को निश्चित करते है इनका मुख्य उद्देश्य होता है इसके द्वारा अच्छा फल प्राप्त करना ।

प्रत्येक राज्य मे सपर्क विभाग होता है जिसमे 6 अधिकारी जो कि शिक्षा

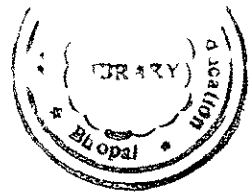

किया जाता है इस कार्यक्रम की रूप रेखा को वाद विवाद द्वारा अतिम निर्णय लिया जाता है इसके बाद निर्णित रूप रेखा के आधार पर एक योजना तैयार की जाती है जिसमे कार्यक्रमो की जानकारी और प्रसारण की तिथि बिना किसी मूल्य (मुफ्त योजना अतर्गत) के स्कूलो को सौप दी जाती है ।

आकाशवाणी 50% कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा प्रसारण प्राथमिक स्कूलो के लिये स्कूली बच्चो के लिये तय करती है इन कार्यक्रमो का चयन यह ध्यान मे रखकरकिया जाता है है कि श्रोताओ की शेक्षिक आवश्यकताओ क़ोअलग अलग जगहो पर ए आई आर द्वारा प्रस्तुत किया जा सके । भाषा बहुत आसान होती है वार्तालाप एव शब्दो का चुनाव ध्यान पूर्वक किया जाता है । चुने हुये विषयो की रूपरेखा स्कूलों मे अलग अलग माध्यम से प्रस्तुत की जाती है ।

शिक्षा प्रसारण माध्यमिक स्तर के स्कूलो मे यह कार्यक्रम स्कूलो की विषय सूची को ध्यान मे रखकर राज्य शिक्षा विभाग द्वारा तय किया जाता है और इसका प्रसारण कुछ विशेष गुटो के लिये किया जाता है ताकि यह छात्रो के लिये उपयोगी हो सके इसका उद्देश्य कक्षा मे पढाई को उपयोगी बनाना है ।

विश्व विद्यालय द्वारा पत्र संवाद :

रेडियो के माध्यम से पत्र सवाद कर सकते है इसकी सुविधा दिल्ली